उपपन्नं ननु शिवं सप्तस्वङ्गेषु यस्य मे ।

दैवीनां मानुषीणां च प्रतिहर्ता त्वमापदाम् ।।60।।

अन्वय सप्तसु अङ्गेषु शिवम् उपपन्नम्। ननु यस्य दैवीनां मानुषीणां च आपदां त्वम् प्रतिहर्ता (असि)।

अनुवाद मेरे राज्य के सातों अंगों (स्वामी, अमात्य, सुहृत्, कोश, राष्ट्र, दुर्ग, बल) में सर्वथा कुशल ही है क्योंकि मेरी दैवी तथा मानुषी दोनों प्रकार की विपत्तियों को हटाने वाले (स्वयं) आप विद्यमान हैं।

टिप्पणियाँ

इस पद्य का अन्वय ध्यानपूर्वक देखिए, (मे राज्यस्य) सप्तस्वङ्गेषु शिवं उपपन्नं ननु, मेरे राज्य के सातो अंगों का कुशल उचित होना ही है अर्थात् आप जैसे अथर्वविद्यावेत्ता गुरु के मेरी रक्षा में तत्पर रहने के कारण मेरे राज्य के सातों अंगों में कुशल होना स्वाभाविक ही है।

सप्तस्वङ्गेषु सप्तसु अंगेषु सात अंगों में।

विशेष प्राचीन राजनीतिशास्त्र के ज्ञाताओं याज्ञवल्क्य, चाणक्य आदि के मत में राज्य के सात अंग माने गए हैं। देखिए,

स्वाम्यमात्यो जनो दुर्गः कोशो दण्डस्तथैव च।

मित्राण्येताः प्रकृतयो राज्यं सप्ताग्मुच्यते।। (याज्ञवल्क्यस्मृति 1.353)

राज्य के सात अंग इस प्रकार हैं: (1) स्वामी (राजा), (2) अमात्य (मन्त्री), (3) जन (लोग, प्रजा), (4) दुर्ग (किला), (5) कोश (खजाना), (6) दण्ड (सेना) और (7) मित्र (सहायक)।

दैवीनां मानुषीणाम् आपदाम् दैवी और मानुषी आपत्तियों का।

विशेष दैवी विपत्तियों जिन पर मनुष्य का वश नहीं होता और जो प्राकृतिक विपत्तियाँ होती है। ये हैं: आग लग जाना, बाढ़ आना, बीमारी का फैलना, अकाल पड़ना आदि ये विपत्तियाँ दैववश होती हैं। अत: उन्हें दैवी विपत्तियां कहा जाता है। मनुष्यों से आने वाली विपतियाँ मानुषी विपत्तियाँ कहलाती हैं। जैसे.चोरी, डाका, बड़ा भारी राज.कर आदि। इस प्रसंग में नीतिज्ञ कामन्दक आचार्य के वचन देखिए,

हुताशनो जलं व्याधिर्दुर्भिक्षं मरणं तथा।
इति पञ्चविधं दैवं मानुषं व्यसनं तत:।
आयुक्षेभ्यश्चौरेभ्य: परेभ्यो राजवल्लभात्।
पृथिवीपतिलोभाच्च नराणां पंचधा मतम्।।

उपर्युक्त श्लोक में जहां एक और दिलीप राजा की नम्रता एवं शिष्टता व्यक्त होती है वहाँ दूसरी ओर पुरोहित वशिष्ठ की महत्त्वपूर्ण स्थिति भी प्रकट होती है। उसमें राजा की दैवी और मानुषी विपदाओं का निराकरण करने की सामर्थ्य थी। प्राचीनकाल में राजपुरोहितों का विशिष्ट स्थान था। वे विद्वान् नीतिज्ञ तथा मन्त्रों के ज्ञाता होते थे। अतएव राजा उन्हें

विशेष सम्मान देते थे और विपत्ति के समय उनसे सहायता लेते थे। वशिष्ठ भी राजा दिलीप के ऐसे ही पुरोहित थे। दिलीप उन्हें अपना परम रक्षक मानते थे।

प्रतिहर्ता दूर करने वाला। प्रति धातु हृ तृच्।